ब्रिटेन में हिंदी

उषाराजे सक्सेना

ब्रिटेन में हिंदी

उषाराजे सक्सेना

विश्वजाल पत्रिका अभिव्यक्ति की संपादिका

दोस्त पूर्णिमा वर्मन

एवं

साहित्यकार

भाई प्राण शर्मा को

समर्पित

उषाराजे सक्सेना

गोरखपुर उत्तरप्रदेश में जन्मी, विगत तीन दशक से इंग्लैंड में प्रवासी भारतीय के रूप में जीवनयापन करनेवाली, मूलत: कवयित्री व कथाकार उषाराजे सक्सेना सर्जनात्मक प्रतिभा-संपन्न एक ऐसी लेखिका हैं जिनके साहित्य में अपने देश, सभ्यता, संस्कृति तथा भाषा के प्रति गहरे और सच्चे राग के साथ प्रवासी जीवन के व्यापक अनुभवों और गहन सोच का मंथन मिलता है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी उषाराजे सक्सेना का लेखन (हिंदी-अंग्रेजी) पिछली सदी के सातवें दशक में साउथ लंदन की स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं एवं रेडियो प्रसारण के द्वारा प्रकाश में आया। तदनन्तर आपकी कविताएँ कहानियाँ एवं लेख आदि भारत, अमेरिका एवं योरोप की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहीं। आपकी कई रचनाएँ विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेजी में अनूदित हो चुकी हैं। कुछ रचनाएँ जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित हैं।

उषाराजे ब्रिटेन की एकमात्र हिंदी की साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' की सह-संपादिका तथा यू.के. हिंदी समिति की उपाध्यक्षा हैं। पिछले तीन दशकों से आप ब्रिटेन के 'लंदन बॉरो ऑफ मर्टन' की विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रही हैं। आपने बॉरो ऑफ मर्टन एजुकेशन अथॉरिटी के पाठ्यक्रम का हिंदी- अनुवाद भी किया।

ब्रिटेन में आयोजित होनेवाले प्रत्येक राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय हिंदी भाषा साहित्य-सम्मेलनों एवं कवि-सम्मेलनों की धुरी उषाराजे जी विश्वभर में अपने विशिष्ट लेखन के साथ ही छठे एवं सातवें विश्व हिंदी सम्मेलनों में अपनी सक्रिय सहभागिता एवं हिंदी-सेवा के लिए जानी जाती हैं।

विगत वर्षों में भारत की विभिन्न संस्थाओं ने आपको प्रवास में हिंदी- साहित्य प्रचार-प्रसार सेवा के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत किया और 2001 में भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उषा जी को' उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान 'लखनऊ में' हिंदी विदेश प्रसार सम्मान' से पुरस्कृत किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा में दिए गए आपके 'ब्रिटेन में हिंदी' पर त्रि -दिवसीय व्याख्यानों को हिंदी संस्थान आगरा पुस्तक के रूप में प्रस्तुत

कर रही है। कुरु क्षेत्र विश्वविद्यालय हरियाणा में उषा जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर शोध हो चुका है।

प्रमुख कृतियाँ -

काव्य - संग्रह - 'विश्वास की रजत सीपियाँ' (1996), 'इंद्रधनुष की तलाश में' (1997) कहानी - संकलन - 'मिट्टी की सुगंध' (संपादन, 1999) (ब्रिटेन के कथाकारों का प्रथम कहानी – संकलन) कहानी - संग्रह- 'प्रवास में' (2002), 'वाकिंग पार्टनर' (2003) व्याख्यान- 'ब्रिटेन में हिंदी भाषा का इतिहास', व्याख्यान - माला के अंतर्गत – प्रकाशकाधीन।

संप्रति - सह - संपादक 'पुरवाई' तथा स्वतंत्र लेखन

ब्रिटेन में हिंदी

1993 से भारत के लब्धप्रतिष्ठ कवियों साहित्यकारों का हर वर्ष लंदन के अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन के लिए आना प्रारम्भ हो गया और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कवियों और साहित्यकारों को ब्रिटेन में एक-साथ मंच मिलने लगा। हिंदी-भाषी उस देश में खुलकर आपस में हिंदी बोलने लगे जहाँ वह पिछले तमाम वर्षों से मात्र 'टैबू' की हालत में थी। यह वह दशक था जब बाजारों में भारतीय वस्त्र, गहने, मिठाईयाँ, सब्जियाँ, वीडियों कैसेट, पुस्तकें आदि खुलकर बिकनें लगीं। नाटकशालाओं में हिंदी फिल्में, मंदिरों में भजन-कीर्तन, सभाओं में व्याख्यान, गोष्ठियाँ, वर्कशॉप, पठन-पाठन और शादी-ब्याह सब-कुछ खुलकर भव्य-स्तर पर होने लगा, यानी ब्रिटिश-भारतीय अपनी परिवेश अपनी रूप के अनुसार ब्रिटेन में बनाने लगे। स्थानीय अंग्रेज जाति, एशियन लोगों के साथ मिलकर स्वयं भारतीय शैली के बाजार और मेले आदि खुले मैदानों और पार्कों में आयोजित करने लगी। उन्हीं दिनों कई प्रसिद्ध भारतीय विवाह और संस्कार आदि भी टी.वी. पर दिखाए गए।

साठ वर्ष पहले जिस ब्रिटेन में हिंदी को 'गुलामों की भाषा' कहकर तिरस्कृत किया जाता था, आज उसी हिंदी को ब्रिटेनवासी चाव से अपना चुके हैं। 'ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन' (बी.बी.सी.) के चैनल, हिंदी प्रसारण को गौरव का मुकुट पहनाकर स्वयं को धन्य मान रहे हैं। इसके लिए हिंदी लेखकों ने कितना संघर्ष किया, कितना अपमान झेला, उसे जाने बिना हमारा सांस्कृतिक इतिहास का ज्ञान अधूरी और अधकचरा ही होगा। प्रस्तुत पुस्तक उसी का तथ्यात्मक विहंगावलोकन है।